9 सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम

'यातायात' दो शब्द से मिलकर बना है–''यात + आयात'; जिसका अर्थ है आना–जाना। प्राचीनकाल से ही मानव–सभ्यता की समस्त जीवन–शैली आवागमन पर ही निर्भर है। आधुनिक काल में बढ़ते संसाधन एवं विकास क्षेत्र को देखते हुए देश में नहीं, सम्पूर्ण विश्व में यातायात से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण नियम बनाये गये हैं, क्योंकि इससे न केवल यातायात सुगम बनता है, बल्कि सड़क दुर्घटना से होने वाले भयावह खतरों से बचा जा सकता है। आम जनता खासतौर से युवा-वर्ग के लोगों में अधिक जागरूकता लाने के लिये इसे शिक्षा, सामाजिक जागरूकता इत्यादि आयामों से जोड़ा जाना प्रासंगिक है, क्योंकि विश्व में सड़क-यातायात में मौतें और जख्मी होना एक साधारण घटना हो गयी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रति वर्ष 10 लाख से अधिक सड़क-हादसों के शिकार व्यक्तियों की मौत हो जाती है।

हादसों से बचने के लिए यातायात के नियमों का पालन करना अति आवश्यक है। इसके ज्ञान के अभाव में एक सुचारु रूप से पालन न करने के कारण भारत में प्रत्येक वर्ष 1,50,000 से अधिक व्यक्ति सड़क-दुर्घटना में मारे जाते हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों का अनुमान लगाया जा सकता है कि विश्व भर के कुल वाहनों में से केवल एक प्रतिशत ही वाहन भारत में हैं, जबकि विश्व की कुल सड़क-दुर्घटना में से 10% हादसे भारत में होते हैं। ''विडम्बना यह है कि कोई नियम तब तक अपने लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकता जब तक पालनकर्ता उसे आत्मसात् करने की कोशिश न करे।''

सड़क यातायात के नियम विवेकपूर्ण होते हैं, और उनका विवेकपूर्ण पालन करना भी आवश्यक होता है। सड़क पर चलने वालों की सुरक्षा के लिए अनेक कानून एवं नियम बनाए गए हैं, जिसका पालन करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व होता है, जिससे हर कोई सुरक्षित घर पहुँच सके। यदि हम इन नियमों का उल्लंघन करते हैं तो स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी हानि पहुँचाते हैं। यातायात के प्रमुख नियमों को सीखने की सुगमता के अनुसार दो भागों में विभक्त कर सकते हैं—(1) सुरक्षा से सम्बन्धित यातायात के नियम एवं सावधानियाँ, (2) वाहन चलाने के नियम एवं सावधानियाँ।

पैदल, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को हमेशा अपनी लेन में अर्थात् बायीं तरफ रहना चाहिए एवं सड़क पार करते समय दायें-बायें देखने के बाद ही आगे बढ़ना चाहिए। व्यस्त सड़कों पर हमेशा जेब्रा-क्रासिंग का प्रयोग करना चाहिए तथा क्रास करते समय कभी यह न सोचना चाहिए कि वाहन चालक उसे देख रहा है। सड़क की संरचनात्मक ढाँचागत सुविधाओं का पूरा उपयोग हो इसलिए सब-वे (तल मार्ग), फुट ओवर ब्रिज सबका पालन नियमगत करना आवश्यक होता है। शार्टकट या आसान विकल्प खोजना खतरनाक हो सकता है।

पैदल यात्रियों को सड़क पार करते समय मोटर-वाहनों एवं अपने बीच पर्याप्त दूरी रखना चाहिए और पार्क की गई या खड़ी गाड़ियों के बीच से रास्ता नहीं बनाना चाहिए। सड़क के खतरों से अधिकांशतः बच्चे ज्यादा प्रभावित होते हैं, जिसमें हमेशा वाहन चालक की गलती नहीं होती है, क्योंकि बच्चों की लापरवाही और जागरूकता की कमी से भी सड़क दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। बच्चे हमेशा बड़ों का अनुसरण करते हैं इसलिए उनके सामने विवशता में भी सड़क के नियम का उल्लंघन नहीं करना चाहिए और उन्हें ''रुकें, देखें, सुनें, सोचें'' का मूल मंत्र बताना व पालन कराना अति आवश्यक होता है।

वाहन चलाते समय यातायात नियम एवं सुरक्षा की जानकारी के साथ-साथ वाहन चलाने की योग्यता, उम्र एवं परिपक्वता की जानकारी भी आवश्यक होती है। सड़कों पर तीव्रता से बढ़ती दुपहिया और चौपहिया वाहनों की भीड़ को व्यवस्थित करने एवं सड़क पर आवश्यक जगहों पर लगे सड़क नियम से (यातायात नियम) सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण संकेतों की जानकारी रखना

रुकिये

रास्ता दीजिए

प्रवेश निषेध/No Entry

वन वे प्रतिबन्धित

भी आवश्यक होता है क्योंकि भारत में वर्ष 2018 की अवधि में सड़क दुर्घटना में 1,51,471 लोगों की मृत्यु हुई। वाहन चलाते समय कुछ मानवीय भूलें होती हैं जिससे दुर्घटना हो जाती है, इसलिए ऐसे तथ्यों पर गहन विवेचना की आवश्यकता है। बहुत तेज गति से वाहन चलाना, नशे में गाड़ी चलाना, चालक की ध्यान भटकाने वाली चीजें, लालबत्ती का उल्लंघन करना, सीट-बेल्ट और हेलमेट जैसे सुरक्षा साधनों की उपेक्षा, लेन ड्राइविंग का पालन न करना और गलत तरीके से ओवरटेकिंग करना आदि कारणों से सड़क-दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए उपरोक्त निर्देशित समस्त बिन्दुओं पर ध्यान-केन्द्रित करते हुए सावधानी बरतनी चाहिए। वर्तमान में वाहन चलाते समय मोबाइल फोन के बढ़ते प्रयोग के कारण दुर्घटनाएँ बढ़ी हैं। सुरक्षा की दृष्टि से वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

सभी को पीछे छोड़ने की प्रवृत्ति प्रायः हर किसी में होती है, गति में तीव्रता दुर्घटना का जोखिम और दुर्घटना के दौरान चोट की गम्भीरता बढ़ाती है। खुशी के मौके या शौक के कारण लोगों में नशे की प्रवृत्ति होती है; परन्तु नशे की हालत में गाड़ी चलाना, दुर्घटना में वृद्धि करता है। कभी-कभी गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन, होर्डिंग पर ध्यान चले जाना जैसी क्रियाएँ मस्तिष्क-संकेन्द्रक को प्रभावित करता है, इसलिए गाड़ी चलाते समय ऐसी वस्तुओं से दूरी बना लेनी चाहिए। कुछ अन्य बातें भी इसमें शामिल होती हैं, जैसे गाड़ी का शीशा समायोजित करना, वाहन में स्टीरियो एवं रेडियो का चलाना, सड़क पर जानवरों का आ जाना, विज्ञापन या सूचनापट्ट आदि चीजों से चालक को अपना ध्यान नहीं भंग करना चाहिए और मार्ग-परिवर्तन एवं ध्यान हटाने वाली बाहरी चीजें देखने के दौरान सुरक्षित रहने के लिए वाहन गति धीमी रखने की आवश्यकता होती है।

वाहन चलाते समय चौराहों पर लगी बत्तियों एवं चौराहों पर किस नियम की आवश्यकता होती है उस पर चर्चा जरूरी है। लाल बत्ती संकेत देती है कि वाहन को रुकना है; पीली बत्ती का संकेत है कि चलने के लिए तैयार होना एवं अन्त में हरी बत्ती का संकेत होता है अब आगे बढ़ना या चलना है। इसके साथ ही चौराहे पर बायें मुड़ना (लेफ्ट टर्न) हमेशा खुला रहने का मतलब है कि बायीं तरफ मुड़ने के लिए या जाने के लिए रुकने की आवश्यकता नहीं है; परन्तु ध्यान रखना होता है कि चौराहे पर हमारी दाहिनी तरफ से आने वाले वाहन से भी हमें बायीं तरफ रहना है और जब तक पर्याप्त जगह न मिले हमें दाहिनी लेन में नहीं आना चाहिए। परिवहन विभाग से जारी किए गये सड़क से सम्बन्धित कई महत्त्वपूर्ण संकेत निर्धारित किए गये हैं, जिसकी जानकारी रखने एवं पालन करने से यातायात को सुगम, सहज एवं सुखद बनाया जा सकता है। सामान्य रूप से उसे दो भागों में बाँटा गया है, ''लिखित संकेत एवं चित्र संकेत''। लिखित संकेतों में शब्दों, अंकों तथा वाक्यों का प्रयोग करके आवश्यक बातें बतायी जाती हैं। लिखित संकेतों का इतिहास बहुत पुराना है पर इनकी संख्या बहुत कम है। 'मील के पत्थर', 'होर्डिंग द्वारा दिशा-निर्देश', 'गंतव्य स्थानों का ज्ञान कराना' तथा 'सड़क-यातायात से सम्बन्धित अचानक कोई परिवर्तन' आदि की जानकारी देने के लिए लिखित संकेतों का प्रयोग करते हैं। कभी-कभी कुछ मार्गों पर यातायात संकेत के साथ 'मोड़', 'तीव्र-मोड़', 'सड़क की मरम्मत हो रही है', कृपया धीरे चलें, सावधान बच्चे हैं' जैसे लिखित संकेतों के माध्यम से भी सावधानी बरतने के लिए आगाह किया जाता है। प्रयोजन के आधार पर चित्र संकेतों को तीन श्रेणी में प्रदर्शित करते हैं—

(क) खतरे की चेतावनी देने वाले संकेत,

(ख) विनियामक संकेत तथा

(ग) सूचनात्मक संकेत।

चित्र संकेतों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उन्हें आसानी से देखा, समझा, और पालन किया जा सकता है, प्रत्येक वाहन चालक को निर्देशित चिह्न को समझकर ही वाहन चलाना चाहिए। परिवहन विभाग द्वारा उक्त चिह्नों का सही ज्ञान कराकर ही वाहन-चालक को वाहन चलाने के लिए ड्राइविंग-लाइसेंस (चालन अनुमति पत्र) दिया जाता है। परन्तु उसका उचित पालन ही यातायात को सुगम एवं सुखदायी बनाता है। चित्र संकेतों के आकार और रंग अलग-अलग होते हैं। लाल रंग के गोलाकार संकेत

आदेशात्मक होते हैं; लाल रंग के त्रिकोणीय संकेत चेतावनी देने वाले होते हैं और नीले रंग के आयाताकार संकेत सूचना प्रदायक होते हैं।

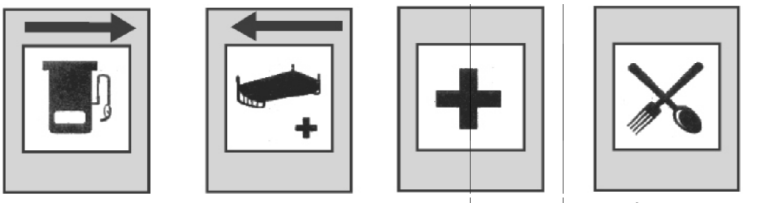

यातायात के संकेत ''भारतीय रोड-कांग्रेस'' (आई0आर0सी0) द्वारा जारी किये जाते हैं तथा संकेत चिह्नों और नियमों का प्रयोग कर बनाये जाते हैं, जिसका अनुपालन देश के सभी नागरिकों से करने की अपेक्षा की जाती है।

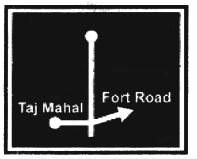

आगामी दिशा संकेत

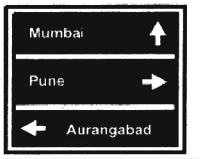

गंतव्य संकेत

गोल चक्कर पर दिशा संकेत

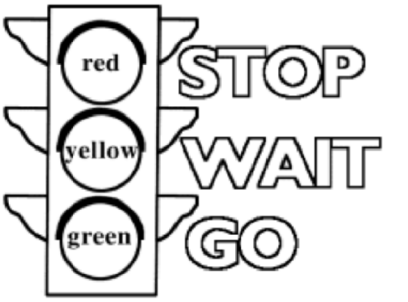

दिशा संकेत

स्थान संकेत

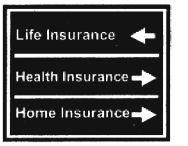

पुनराश्वासन संकेत

यातायात के नियमों का पालन करने में कभी-कभी अन्य गतिरोध उत्पन्न हो जाते हैं क्योंकि अधिकांशतः लोग नियमों की अनदेखी करके अतिशीघ्रता करने की कोशिश करते हैं, जिसके कारण सड़कों पर जाम की स्थिति बन जाती है एवं यातायात बाधित होने लगता है। ऐसी परिस्थिति में कभी-कभी विकल्प के अभाव में जनता यातायात के नियमों को तोड़ने के लिए विवश हो जाती है।

परिवहन नियम के अनुसार उक्त समस्याओं से निपटने के लिए विवेकपूर्ण तथ्यों का अनुपालन करना चाहिए जिससे कोई दुर्घटना या परेशानी का सामना न करना पड़े। उल्लिखित परिस्थिति में कभी-कभी रोड रेज (सड़क पर झगड़ा) की सम्भावना बन जाती है जिसको विविध संकेतों से पहचानकर बचा जा सकता है। उदाहरणार्थ–उत्तेजक वाहन चलाना, अचानक तीव्रता लाना और ब्रेक लगाना, सड़कों पर टेढ़ी-मेढ़ी (जिकजैक) ड्राइविंग करना; तीव्र गति में बार-बार लेन बदलना, अपनी लेन से अचानक दूसरे वाहन के आगे अपना वाहन लाना, जान बूझकर अन्य वाहनों के लिए अवरोध उत्पन्न करना, दूसरे वाहन को पीछे से या बगल से टक्कर मारना; वाहन को दूसरे वाहन के पीछे एकदम से सटाकर चलना, निरन्तर हार्न बजाना व लाइट फ्लैश करना। वाहन-चालक को समझदारी दिखाते हुए अपने बचाव के लिए ऐसी स्थिति में उलझने से बचने की कोशिश करनी चाहिए।

यातायात के नियम पालनार्थ भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने सड़क-सुरक्षा में सुधार करने के लिए अनेक कदम उठाये हैं जैसे–सड़क फर्नीचर, सड़क चिह्न (रोड मार्किंग), उन्नत परिवहन प्रणाली का प्रयोग करते हुए राजमार्ग यातायात प्रबन्धन प्रणाली आरम्भ करना, निर्माण कार्य के दौरान ठेकेदारों में अनुशासन को बनाए रखना, चुनिन्दा क्षेत्रों में सड़क सुरक्षा ऑडिट इत्यादि। असंगठित क्षेत्रों में भारी मोटर वाहनों के लिए 'पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना', 'राज्यों में ड्राइविंग प्रशिक्षण स्कूलों की स्थापना', 'दृश्य-श्रव्य तथा प्रिण्ट माध्यमों के द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता पर प्रचार अभियान', सड़क सुरक्षा के क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए स्वैच्छिक संगठनों/व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों का संचालन, वाहनों में सुरक्षा-मानकों को और अधिक सख्त बनाना, जैसे-'सीट-बेल्ट', 'पावर-स्टेयरिंग', 'रिटर-व्यू-मिरर' इत्यादि। राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना सहायता सेवा-योजना के अन्तर्गत विभिन्न राज्य सरकारों और सरकारी संगठनों को क्रेन तथा एम्बुलेन्स उपलब्ध कराना। राष्ट्रीय राजमार्गों को 2-लेन से 4-लेन, 4-लेन से 6-लेन करने का प्रावधान तथा युवा वर्ग में जागरूकता (सड़क-सुरक्षा) का प्रचार करने की प्रक्रिया को भी शामिल करना है।

अन्ततः यातायात के नियमों के बहुआयामी उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य बनता है वह परिवहन विभाग द्वारा बनाए गये यातायात से सम्बन्धित समस्त सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक संकेतकों एवं नियमों का पालन कर देश की समृद्धि एवं विकास में अहम् योगदान देने का प्रयास करें, जिसमें हमारा देश, समाज एवं परिवार सुरक्षित रहकर विकास की पराकाष्ठा को प्राप्त करने में सफल रहे।

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. 'सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम' पर एक निबन्ध लिखिए।

2. यातायात के नियमों को संक्षेप में लिखिए।
3. सड़क दुर्घटना से हम अपना बचाव कैसे कर सकते हैं?
4. यातायात के नियमों का पालन करना क्यों आवश्यक है?
5. यातायात के पालन हेतु भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने सड़क सुरक्षा में सुधार करने के लिए कौन से कदम उठाये हैं?

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सड़क सुरक्षा से आप क्या समझते हैं?
2. सड़क दुर्घटना से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
3. यातायात के किन्हीं पाँच नियमों का उल्लेख कीजिए।
4. यातायात के नियमों के पालन करने में कौन से गतिरोध उत्पन्न होते हैं?
5. पैदल, सायकिल एवं रिक्शा चालकों को सड़क पर चलते समय किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
6. सड़क दुर्घटनाएँ क्यों होती हैं?

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. यातायात किन शब्दों से मिलकर बना है?
2. यातायात का क्या अर्थ है?
3. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रतिवर्ष सड़क हादसे में कितने व्यक्तियों की मौत हो जाती है?
4. भारत में सड़क दुर्घटनाओं में प्रतिवर्ष कितने व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है?
5. सड़क यातायात के नियम कैसे होते हैं?
6. विश्व की कुल सड़क दुर्घटना में से कितने प्रतिशत हादसे भारत में होते हैं?
7. विश्व भर के कुल वाहनों में से कितने प्रतिशत वाहन भारत में हैं?
8. यातायात के प्रमुख नियमों को कितने भागों में विभक्त किया जा सकता है?
9. पैदल, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को किस लेन में चलना चाहिए?
10. सड़क पर चलने के लिए यातायात का मूल मंत्र क्या है?
11. भारत में वर्ष 2011 की अवधि में लगभग कितनी सड़क दुर्घटनायें हुईं?
12. भारत में वर्ष 2011 में सड़क दुर्घटना में कितने लोगों की मृत्यु हुई?
13. सड़क दुर्घटना होने के दो कारण लिखिए।
14. लाल बत्ती का संकेत क्या है?
15. पीली बत्ती का संकेत क्या है?
16. हरी बत्ती का संकेत क्या है?
17. यातायात को सुगम बनाने हेतु कितने प्रकार के चित्र संकेत होते हैं?
18. यातायात के संकेत किसके द्वारा जारी किये जाते हैं?

●●●

टिप्पणी

बात

पित्त = पित्ताशय का रस। **सहवर्ती** = साथ रहनेवाला, सहचर। **बात** = वचन, शरीर में स्थित वायु। **जलबात** = जलवायु। **सम्भाषण** = बातचीत। **अशरफुल मखलूकात** = (सम्पूर्ण) जगत् में श्रेष्ठ। **शुकसारिकादि** = शुक (तोता) और सारिका (मैना) आदि। **नभचारी** = नभचर, आकाश में विचरण करनेवाला अर्थात् पक्षी। **कुरआन शरीफ** = इस्लाम धर्म का अरबी भाषा में लिखित ग्रन्थ। **कलामुल्लाह** = अल्लाह (ईश्वर) का कलाम (वचन)। **होली बाइबिल** = पवित्र बाइबिल, ईसाइयों की धार्मिक पुस्तक। **निरवयव** = बिना अवयव (अंग) का निराकार। **प्रेम सिद्धान्ती** = प्रेम द्वारा ईश्वर-प्राप्ति के सिद्धान्त में विश्वास करनेवाले (भक्त)। **अपाणिपादो जवनो ग्रहीता** = बिना हाथ-पैरवाला (होकर भी) गमन करनेवाला और ग्रहण करनेवाला अर्थात् ईश्वर। **शालिग्राम** = शालिग्राम, जल-प्रवाह से घिसी श्याम वर्ण की पत्थर की चिकनी बटिया जिसकी विष्णु के रूप में पूजा की जाती है। **द्योतन करना** = प्रकाशित करना। **गात माँहि बात करामात है** = शरीर में बात की ही करामात है। **अनुत्साह आदि** = (अन् + उत्साह + आदि) उत्साह का न होना आदि। **सहजतया** = सहज रूप से। निर्गत = निकली हुई। **कुराही** = बुरी राह पर चलनेवाले। **आधिपत्य** = अधिकार। **साध्य** = सिद्ध या प्राप्त किये जाने योग्य। **सहृदयगण** = कोमल चित्तवाले, रसिक। **सत्यसन्ध** = सत्य प्रतिज्ञ। **शऊर** = ढंग। **विदग्धालाप** = (विदग्ध + आलाप) विद्वत्तापूर्ण कथन। **अंगीकार** = स्वीकार।

मन्त्र

सिगार = एक विशेष प्रकार का मोटा तथा बड़ा सिगरेट, चुरुट। **गोल्फ** = विशेष प्रकार की स्टिक (छड़ी) और गेंद से खेला जानेवाला हॉकी से भिन्न एक पाश्चात्य खेल। **दुहाई** = संकट में रक्षा के लिए की गयी पुकार। **मर्मभेदी** = मर्म पर आघात करनेवाला जैसे मर्मभेदी बाण। **हुक्काम** = शासक या अधिकारीगण। **प्रहसन** = हास्य रसप्रधान नाटक। **रद्दा चढ़ाना** = व्यंग्यपूर्ण बात कहकर कुछ करने के लिए उकसाना। **प्रतिघात** = रुकावट, बाधा। **महुअर** = सँपेरे मदारियों द्वारा मुँह से बजाया जानेवाला बाजा, तुमड़ी। **प्यानो** = हारमोनियम से मिलता-जुलता एक पाश्चात्य वाद्य-यन्त्र। **बाकमाल** = आश्चर्यजनक कार्य कर दिखानेवाला। **कारसाज** = काम बना देनेवाला। **चेतना** = सामान्य मानसिक स्थिति। **उपचेतना** = अन्तर्मन। **ठूँठ रहना** = अप्रभावित रहना, स्तब्ध रह जाना। **ग्लानि** = पश्चाताप। **जीवन-पर्यन्त** = आजीवन।

गुरु नानकदेव

अनुष्ठान = किसी फल के निमित्त किसी देवता की की जानेवाली आराधना, शास्त्रविहित कर्म करना। **मृदु-मन्थर** = मधुर और धीमा। **उद्वेलित** = छलकता हुआ या ऊपर से बहता हुआ। **आविर्भाव** = अवतार लेना, प्रकट होना। **षोडशकला** = चन्द्रमा की सोलह कलाएँ। **कला** = छोटा अंश, चन्द्र मण्डल का सोलहवाँ भाग। **पार्थिव** = पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुओं का बना हुआ। **आध्यात्मिक दृष्टि** = आत्मा-परमात्मा तथा जन्म-मृत्यु सम्बन्धी विचारधारा। **आगन्तुक** = अतिथि, आया हुआ। **मृतप्राय** = मृत–जैसा, मरणासन्न। **संजीवनी** = पुनर्जीवित करनेवाली एक कल्पित ओषधि। **लोकोत्तर** = लोक से परे, अलौकिक, दिव्य, जो इस लोक में नहीं होता है। **उपचार** = इलाज, उपाय, चिकित्सा, सेवा। **सन्धान** = ढूँढ़ने का काम, मिलाना। **उद्भासित** = जो सुन्दर रूप में प्रकट हुआ हो, सुशोभित, प्रकाशित। **आस्था** = किसी महान् या पूज्य अथवा देवता में होनेवाली विश्वासपूर्ण भावना। **निरीह** = इच्छारहित, विरक्त, भोला-भाला। **दुर्धर** = कठिनाई से धारण करने योग्य, प्रचण्ड, विकट। **क्षुद्र अहमिका** = क्षुद्र अहंकार। **सम्मुखीन** = सामने की। **अनुग्रह** = निःस्वार्थ भाव से किया जानेवाला उपकार या भलाई। **अमृतोपम** = अमृत के समान।

गिल्लू

अनायास = (अन् + आयास) बिना प्रयत्न के, अपने आप। **कागभुशुण्डि** = राम के एक भक्त जो शाप के कारण कौआ हो गये थे, रामचरितमानस में उल्लिखित है कि उन्होंने गरुड़ को राम की कथा सुनायी थी। प्रस्तुत पाठ में हास्य-व्यंग्य का पुट देने के लिए 'कौए' के सामान्य अर्थ में इसका प्रयोग हुआ है। **अवमानित** = (अव + मानित) निम्न के अर्थ में 'अव' उपसर्ग का प्रयोग, अपमानित। **काकपुराण** = पुराण, लम्बी धार्मिक कथाओं से युक्त प्राचीन पुस्तकें हैं। ये 18 हैं। काकपुराण नाम का कोई पुराण नहीं है। इसका प्रयोग यहाँ काक-वृत्तान्त के अर्थ में हास्य-विनोद उत्पन्न करने के लिए हुआ है। **सुलभ** = आसानी से प्राप्त हुआ। **पीलाभ** = पीली कान्ति। **कार्यकलाप** = कार्यों का समूह, विविध कार्य। **गात** = गात्र, शरीर। **अपवाद** = जिस पर सामान्य नियम न लागू होते हों।

स्मृति

नारायण-वाहन = विष्णु की सवारी, पक्षियों का राजा गरुड़। **उद्वेग** = बेचैनी, घबराहट। **चरस** = चमड़े का बड़ा थैला जिससे बैलों की सहायता से कुएँ से पानी निकाला जाता है। **चक्षुःश्रवा** = साँप (चक्षु या आँख से सुननेवाला)। लोगों की गलत धारणा रही है कि साँप के कान नहीं होते वह आँख से ही सुनता है। **आकाश-कुसुम** = आकाश में फूल उगने-जैसा असम्भव कार्य। **गुंजल्क** = गोलाई में सिमटना। **विरोधी** = विपक्षी, मुकाबला करनेवाला। **मिथ्या** = असत्य।

निष्ठामूर्ति कस्तूरबा

सहधर्मचारिणी = धर्म या कर्त्तव्यों के निर्वाह में साथ देनेवाली। **एकाक्षरी** = एक अक्षरवाला। **आन्तरिक** = अन्दर का, हृदय सम्बन्धी, भीतरी। **दिव्य** = अलौकिक। **लोकोत्तर** = अलौकिक, दिव्य। **अमोघ** = निष्फल न होनेवाली, अचूक। **कृति** = कार्य, कर्म, रचना। **निर्भर्त्सना** = निन्दा। **आबदार (फारसी)** = पानीदार, कान्तिमान्। **विचिकित्सा** = सन्देह या भूल। **दाद** = (फारसी) न्याय। **स्मारक** = स्मरण हेतु बनायी गयी कोई रचना। **प्रत्युत्पन्नमति** = तुरन्त बुद्धि, जो परिस्थिति-विशेष में तुरन्त बुद्धि से काम लेता हो। **पातिव्रत्य** = पति सेवा का व्रत। **कृतार्थ** = धन्य। **कसौटी** = परीक्षा, जाँच।

ठेले पर हिमालय

खासा = विशेष। **दिलचस्प** = दिल को रमानेवाला, रुचिकर। **यकीन** = विश्वास। **तत्काल** = उसी समय। **एमिल जोला** = एक फ्रांसीसी उपन्यासकार। **बाइनाकुलर** = दोनों आँखों से देखने के लिए प्रयुक्त दूरबीन। **तन्द्रालस** = (तन्द्रा + अलस) थकावट के कारण आलसी। **अतुलित** = जिससे किसी की तुलना न हो सके। **अनासक्ति योग** = गाँधीजी की पुस्तक का नाम जो गीता की टीका है। **खिन्न** = दुःखी। **कत्यूर** = हिमालय की एक घाटी का नाम। **किन्नर** = संगीत-कला-प्रिय देवयोनि विशेष। **यक्ष** = ऐश्वर्य-प्रिय देवयोनि विशेष। **बेसाख्यता** = (फारसी) स्वाभाविक रूप से। **हर्षातिरेक** = (हर्ष + अतिरेक) अत्यधिक हर्ष। **ग्लेशियर** = बर्फ की नदी। **निरावृत्त** = (निर् + आवृत्त) खुला। **आसार** = सम्भावना। **ट्यूरिस्ट** = पर्यटक, यात्री। **पीर** = पीड़ा। **अन्तर्द्वन्द्व** = भावों का संघर्ष। **साधक** = ईश्वर-प्राप्ति की साधना करनेवाले। **शाश्वत** = सदा रहनेवाला। **अदम्य** = जिसे दबाया न जा सके, सबल। **कबहुँक** = कभी। **हौं** = मैं। **रहौंगो** = रहूँगा।

तोता

कायदा-कानून = नियम-कानून। **टोटा** = कमी। **अविद्या** = जिसके पास विद्या न हो अथवा विद्या विहीन। **खर-पात** = घास-फूस। **अनोखा** = अद्भुत। **दामी** = कीमती। **रवाना हो गया** = चल दिया। **अभाव** = कमी। **तत्काल** = तुरन्त। **चौंके** = आश्चर्यचकित। **निहारने लगना** = देखने लगना। **डैने** = पंख। **आकुल** = व्याकुल।

सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम

यातायात = आना-जाना। **सुगम** = आसान। **खासतौर** = विशेष रूप से। **जख्मी होना** = चोटिल होना। **आत्मसात** = ग्रहण। **अनुसरण** = नकल। **मानवीय** = मानव सम्बन्धी। **आगाह** = सावधान। **आसानी** = सरलता। **गतिरोध** = बाधा। **अचानक** = एकाएक। **कोशिश** = प्रयास।

●●●

॥ हिन्दी काव्य ॥

भूमिका

कविता क्या है?

काव्य उस छन्दोबद्ध एवं लयात्मक साहित्यिक रचना को कहते हैं, जो श्रोता या पाठक के मन में भावात्मक आनन्द की सृष्टि करती है। चिन्तन की अपेक्षा काव्य में भावनाओं की प्रधानता होती है। उसका उद्देश्य सौन्दर्य की अनुभूति से आनन्द की प्राप्ति है। आनुवंशिक रूप से कविता भाषा की भी समृद्धि करती है, किन्तु मूलतः वह आनन्द का साधन है। तर्क, युक्ति एवं चमत्कार मात्र का आश्रय न लेकर कवि रसानुभूति का समवेत प्रभाव उत्पन्न करता है। अतः कविता में यथार्थ का यथारूप चित्रण नहीं मिलता, वरन् यथार्थ को कवि जिस रूप में देखता है तथा जिस रूप में उससे प्रभावित होता है, उसी का चित्रण करता है। कवि का सत्य सामान्य सत्य से भिन्न प्रतीत होता है। वह इसी प्रभाव को दिखाने के लिए अतिशयोक्ति का सहारा भी लेता है। अतः काव्य में अतिशयोक्ति दोष न होकर अलंकार बन जाता है।

कविता के विषय

मूलतः मानव ही काव्य का विषय है। जब कवि पशु-पक्षी अथवा निसर्ग का वर्णन करता है, तब भी वह मानव-भावनाओं का ही चित्रण करता है। व्यक्ति और समाज के जीवन का कोई भी पक्ष काव्य का विषय बन सकता है। आज के कवि का ध्यान जीवन के सामान्य एवं उपेक्षित पक्ष की ओर भी गया है। उसके विषय महापुरुषों तक ही सीमित नहीं हैं, अपितु वह छिपकली, केचुआ आदि पर भी काव्य-रचना करने लगा है। उन्नत विषय, भाव, विचार एवं आदर्श जीवन का सन्देश कविता को स्थायी, महत्त्वपूर्ण और प्रभावकारी बनाने में अधिक समर्थ होते हैं।

कविता और संगीत

कविता छन्दबद्ध रचना है। छन्द उसे संगीत प्रदान करता है। छन्द की लय यति-गति, वर्णों की आवृत्ति, तुकान्त पदावली इस संगीत के प्रमुख तत्त्व हैं, किन्तु संगीत और काव्य के क्षेत्र अलग-अलग हैं। संगीत का आनन्द मूलतः नाद का आनन्द है, जबकि काव्य में मूल आनन्द अर्थ का है। कविता में नाद का सौन्दर्य अर्थ का ही अनुगामी होता है।

सादृश्य-विधान

कविता भाव-प्रधान होती है। अपने भावों को पाठक के हृदय तक पहुँचाने के लिए कवि वर्ण्य-विषयों के सदृश अन्य वस्तु-व्यापार प्रस्तुत करता है। जैसे कमल के सदृश नेत्र, चन्द्र-सा मुख, सिंह के समान वीर। इसी को सादृश्य विधान या अप्रस्तुत योजना कहते हैं।

शब्द-शक्ति

शब्द का अर्थ-बोध करानेवाली शक्ति ही शब्द-शक्ति है। शब्द और अर्थ का सम्बन्ध ही शब्द-शक्ति है। शब्द-शक्तियाँ तीन हैं—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। अभिधा से मुख्यार्थ का बोध होता है तथा मुख्यार्थ में बाधा होने पर लक्षणा का आश्रय लेना पड़ता है। अन्त में व्यंजना से अर्थ मिलता है। कवि का अभिप्रेत अर्थ मुख्यार्थ तक ही सीमित नहीं रहता। कविता का आनन्द लेने के लिए शब्दों के लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ तक पहुँचना आवश्यक होता है। कवि फूलों को हँसता हुआ और मुख को मुरझाया हुआ कहना पसन्द करते हैं, सामान्यतः हँसना मनुष्य के लिए प्रयुक्त होता है और मुरझाना फूल के लिए परन्तु, मुख्यार्थ जाने बिना हम लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ तक नहीं पहुँच सकते। कवि भी बड़ी सावधानी से शब्द-चयन करता है। कविता के शब्दों का आग्रह जिधर सहज रूप में पड़े, पाठक अथवा श्रोता को उधर अभिमुख होना चाहिए।

कविता के सौन्दर्य-तत्त्व

कविता के निम्नांकित सौन्दर्य-तत्त्व हैं—

(i) भाव-सौन्दर्य (ii) विचार-सौन्दर्य (iii) नाद-सौन्दर्य और (iv) अप्रस्तुत योजना का सौन्दर्य।

(i) भाव-सौन्दर्य—प्रेम, करुणा, क्रोध, हर्ष, उत्साह आदि का विभिन्न परिस्थितियों में मर्मस्पर्शी चित्रण ही भाव-सौन्दर्य है। भाव-सौन्दर्य को ही साहित्य-शास्त्रियों ने रस कहा है। प्राचीन आचार्यों ने रस को काव्य की आत्मा माना है।

शृंगार, वीर, हास्य, करुण, रौद्र, शान्त, भयानक, अद्‌भुत तथा वीभत्स—नौ रस कविता में माने जाते हैं। परवर्ती आचार्यों ने वात्सल्य और भक्ति को भी अलग रस माना है। सूर के बाल वर्णन में वात्सल्य का, गोपी-प्रेम में शृंगार का, भूषण की 'शिवा बावनी' में वीर रस का चित्रण है। भाव, विभाव और अनुभाव के योग से रस की सृष्टि होती है। रस का संक्षिप्त वर्णन परिशिष्ट-3 में दिया गया है।

(ii) विचार-सौन्दर्य—विचारों की उच्चता से काव्य में गरिमा आती है। गरिमापूर्ण कविताएँ प्रेरणादायक भी सिद्ध होती हैं। उत्तम विचारों एवं नैतिक मूल्यों के कारण ही कबीर, रहीम एवं तुलसी के नीति-परक दोहे और गिरधर की कुण्डलियाँ अमर हैं। इनसे जीवन की व्यावहारिक शिक्षा, अनुभव तथा प्रेरणा प्राप्त होती है।

आज की कविता में विचार-सौन्दर्य के प्रचुर उदाहरण मिलते हैं। गुप्तजी की कविता में राष्ट्रीयता और देश-प्रेम आदि का विचार-सौन्दर्य है। 'दिनकर' के काव्य में सत्य, अहिंसा एवं अन्य मानवीय मूल्य हैं। 'प्रसाद' की कविता में राष्ट्रीयता, संस्कृति और गौरवपूर्ण अतीत के रूप में विचारों का सौन्दर्य देखा जा सकता है। आधुनिक प्रगतिवादी और प्रयोगवादी कवि जन-साधारण का चित्रण, शोषितों एवं दीन-हीनों के प्रति सहानुभूति और शोषकों के प्रति विरोध आदि प्रगतिवादी विचारों का ही वर्णन करते हैं।

(iii) नाद-सौन्दर्य—कविता छन्द-बद्ध रचना है। छन्द नाद-सौन्दर्य की सृष्टि करता है। छन्द के द्वारा कविता में लय, तुक, गति और प्रवाह का समावेश होता है। वर्ण और शब्द के सार्थक और समुचित विन्यास से, कविता में नाद-सौन्दर्य और संगीतात्मकता आ जाती है जिससे कविता का सौन्दर्य बढ़ जाता है। यह सौन्दर्य श्रोता और पाठक के हृदय में आकर्षण पैदा कर देता है। वर्णों की बार-बार आवृत्ति (अनुप्रास), विभिन्न अर्थवाले एक ही शब्द के बार-बार प्रयोग (यमक) से भी कविता में नाद-सौन्दर्य का समावेश होता है, जैसे—

खग-कुल कुल कुल सा बोल रहा।
किसलय का अञ्चल डोल रहा॥

यहाँ पक्षियों के कलरव में नाद-सौन्दर्य को देखा जा सकता है। कवि ने शब्दों के माध्यम से नाद-सौन्दर्य के साथ पक्षियों के समुदाय और हिलते हुए पत्तों का चित्र भी प्रस्तुत कर दिया है। **'घन घमण्ड नभ गरजत घोरा'** अथवा **'कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि'** में मेघों का गर्जन-तर्जन तथा नूपुर की ध्वनि का सुमधुर स्वर क्रमशः है। इन दोनों ही स्थलों पर नाद-सौन्दर्य ने भाव को स्पष्ट भी किया है और नाद-बिम्ब को साकार कर भाव को गरिमा भी प्रदान की है।

बिहारी के निम्नलिखित दोहे में वायुरूपी कुंजर की चाल का वर्णन है। शब्दों की ध्वनि में हाथी के घण्टे की ध्वनि भी सुनायी पड़ती है। कवि की शब्द-योजना में चित्र साकार हो उठा है—

रनित भृंग घण्टावली झरित दान मधु नीर।
मन्द-मन्द आवतु चल्यो, कुंजर कुंज समीर॥

इसी प्रकार 'घनन-घनन बज उठी गरज तत्क्षण रणभेरी' में मानो रणभेरी प्रत्यक्ष ही बज उठी है। आदि, मध्य अथवा अन्त में तुकान्त शब्दों के प्रयोग से भी नाद-सौन्दर्य उत्पन्न होता है, उदाहरणार्थ—

ढलमल ढलमल चञ्चल अञ्चल झलमल झलमल तारा।

इन पंक्तियों में नदी का कल-कल निनाद मुखरित हो उठा है। पदों की आवृत्ति से भी नाद-सौन्दर्य में वृद्धि होती है, जैसे—

माई री वा मुख की मुस्कान सँभारि न जैहै न जैहै न जैहै।

अथवा

हमकौं लिख्यौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा।
हमकौं लिख्यौ है कहा, कहन सबैं लगीं॥

(iv) अप्रस्तुत योजना का सौन्दर्य—कवि विभिन्न दृश्यों, रूपों तथा तथ्यों को मर्मस्पर्शी और हृदय-ग्राही बनाने के लिए अप्रस्तुतों का सहारा लेता है। अप्रस्तुत-योजना में यह आवश्यक है कि उपमेय के लिए जिस उपमान की, प्रकृत के लिए जिस अप्रकृत की और प्रस्तुत के लिए जिस अप्रस्तुत की योजना की जाय उसमें सादृश्य अवश्य हो। सादृश्य के

साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि उसमें जिस वस्तु, व्यापार और गुण के सदृश जो वस्तु, व्यापार और गुण लाया जाय वह उसके भाव के अनुकूल हो। इन अप्रस्तुतों के सहयोग से कवि भाव-सौन्दर्य की अनुभूति सुलभ बनाता है। कवि कभी रूप-साम्य, कभी धर्म-सत्य और कभी प्रभाव-साम्य के आधार पर दृश्य-बिम्ब उभार कर सौन्दर्य व्यंजित करता है।

रूप-साम्य

करतल परस्पर शोक से, उनके स्वयं घर्षित हुए,
तब विस्फुरित होते हुए, भुजदण्ड यों दर्शित हुए।
दो पद्म शुण्डों में लिये, दो शुण्ड वाला गज कहीं,
मर्दन करे उनको परस्पर, तो मिले उपमा कहीं।

शुण्ड के समान ही भुजदण्ड भी प्रचण्ड है और करतल अरुण तथा कोमल है, यह प्रभाव आकार-साम्य से ही उत्पन्न हुआ है।

धर्म-साम्य

नवप्रभा परमोज्ज्वल लीक-सी गतिमती कुटिला फणिनी समा।
दमकती दुरती घन अंक में विपुल केलि कला खनि दामिनी॥

फणिनी (सर्पिणी) और दामिनी दोनों का धर्म कुटिल गति है, दोनों ही आतंक का प्रभाव उत्पन्न करती हैं।

भाव-साम्य

प्रिय पति, वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दुःख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ,
वह हृदय हमारा नेत्र तारा कहाँ है?

यशोदा की विकलता को व्यक्त करने के लिए कवि ने कृष्ण को दुःखरूपी जलनिधि में डूबी का सहारा, प्राण प्यारा, नेत्र तारा, हृदय हमारा कहा है।

अग्रलिखित पंक्तियों में सादृश्य द्वारा श्रद्धा के सहज सौन्दर्य का चित्रण किया गया है। मेघों के बीच जैसे बिजली तड़प कर चमक पैदा कर देती है, वैसे ही नीले वस्त्रों से घिरी श्रद्धा का सौन्दर्य देखनेवाले के मन पर प्रभाव डालता है—

नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघ बन बीच गुलाबी रंग॥

इसी प्रकार :

लता भवन ते प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग बिमल विधु जलद पटल बिलगाइ॥

लता-भवन से प्रकट होते हुए दोनों भाइयों की उत्प्रेक्षा मेघ-पटल से निकलते हुए दो चन्द्रमाओं से की गयी है।

काव्यास्वादन

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि कविता का आस्वादन उसके अर्थ-ग्रहण में है। इसलिए पहले शब्दों का मुख्यार्थ समझना आवश्यक है। मुख्यार्थ समझने के लिए अन्वय करना भी आवश्यक है, क्योंकि कविता की वाक्य-संरचना में प्रायः शब्दों का वह क्रम नहीं रहता, जो गद्य में होता है। अतः अन्वय से शब्दों का परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है।

प्रक्रिया में शब्द के वाक्यार्थ के साथ-साथ उसमें निहित लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ भी स्पष्ट हो जाते हैं। कवि कभी-कभी कविता में ऐसे शब्दों का भी साभिप्राय प्रयोग करता है, जिनके स्थान पर उनके पर्याय नहीं रखे जा सकते। कभी-कभी एक शब्द के एकाधिक अर्थ होते हैं और सभी उस प्रसंग में लागू होते हैं, कभी एक ही शब्द अलग-अलग अर्थों में एकाधिक बार प्रयुक्त होता है। कभी विरोधी शब्दों का प्रयोग भाव-वृद्धि के लिए किया जाता है और कभी एक ही प्रसंग के कई शब्द एक साथ आते हैं। इस प्रकार के शब्दों की ओर ध्यान देना चाहिए और अपेक्षित अर्थ जानना चाहिए।

कविता के जिन तत्त्वों का उल्लेख किया गया है उनके सन्दर्भ में कविता के आस्वादन का प्रयास करना चाहिए। काव्यास्वादन के लिए कविता को बार-बार मुखर रूप से पढ़ना आवश्यक है। काव्यास्वादन के लिए निम्नलिखित बातें सहायक हैं—

1. कविता के मूल भाव को समझकर अपने शब्दों में लिखना।

2. रस, अलंकार, गुण और छन्द आदि को समझकर कविता में इनकी उपयोगिता को हृदयंगम करना।
3. अच्छे भाववाले पदों को कण्ठस्थ करना और उनका मुखर पाठ करना।

काव्य के भेद

काव्य के मुख्य दो भेद हैं—श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। श्रव्य काव्य वह काव्य है जो कानों से सुना जाता है। दृश्य काव्य वह है जो अभिनय के माध्यम से देखा-सुना जाता है, जैसे नाटक।

श्रव्य काव्य के दो भेद हैं—प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य। प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य, खण्डकाव्य और आख्यानक गीतियाँ आती हैं।

मुक्तक काव्य के भी दो भेद हैं—पाठ्य मुक्तक तथा गेय मुक्तक।

प्रबन्ध काव्य

(i) महाकाव्य

महाकाव्य में जीवन का व्यापक रूप में चित्रण होता है। इसकी कथा इतिहास प्रसिद्ध होती है। इसका नायक उदात्त और महान् चरित्रवाला होता है। इसमें वीर, शृंगार और शान्त रस में से कोई एक रस प्रधान तथा शेष रस गौण रहते हैं। महाकाव्य सर्गबद्ध होता है तथा इसमें कम-से-कम आठ सर्ग होते हैं। महाकाव्य की कथा में धारावाहिता तथा हृदय को भाव-विभोर करनेवाले मार्मिक प्रसंगों का समावेश भी होना चाहिए।

आधुनिक युग के महाकाव्य में प्राचीन प्रतिमानों में परिवर्तन हुआ है। इतिहास के स्थान पर मानव-जीवन की कोई भी घटना, कोई भी समस्या इसका विषय हो सकती है। महान् पुरुष के स्थान पर समाज का कोई भी व्यक्ति इसका नायक हो सकता है परन्तु, उस पात्र में क्षमता का होना अनिवार्य है। हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध महाकाव्य हैं—**पद्मावत, रामचरितमानस, साकेत, प्रिय-प्रवास, कामायनी, उर्वशी, लोकायतन।**

(ii) खण्डकाव्य

खण्डकाव्य में जीवन के व्यापक चित्रण के स्थान पर उसके किसी एक पक्ष अथवा रूप का संक्षिप्त चित्रण होता है। पर खण्डकाव्य महाकाव्य का संक्षिप्त रूप अथवा एक सर्ग नहीं है। खण्डकाव्य में अपनी पूर्णता होती है। सम्पूर्ण रचना में प्रायः एक ही छन्द प्रयुक्त होता है।

पंचवटी, जयद्रथ-वध, नहुष, सुदामा-चरित, पथिक, गंगावतरण, हल्दीघाटी हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध खण्डकाव्य हैं।

(iii) आख्यानक गीतियाँ

महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न पद्यबद्ध कहानी का नाम आख्यानक गीति है। इसमें वीरता, साहस, पराक्रम, बलिदान, प्रेम और करुणा आदि के प्रेरक घटना-चित्रों से कथा कही जाती है। इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और रोचक होती है। गीतात्मकता और नाटकीयता इसकी विशेषताएँ हैं। **झाँसी की रानी, रंग में भंग, विकट भट** आदि रचनाएँ आख्यानक गीतियों में आती हैं।

मुक्तक काव्य

मुक्तक काव्य महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न प्रकार का होता है। इसमें एक अनुभूति, एक भाव या कल्पना का चित्रण होता है। इसमें महाकाव्य या खण्डकाव्य जैसी धारावाहिता न होने पर भी इनका वर्ण्य-विषय अपने में पूर्ण होता है। प्रत्येक छन्द स्वतन्त्र होता है। जैसे—**बिहारी, कबीर, रहीम के दोहे** तथा **सूर** और **मीरा के पद**।

(i) पाठ्य मुक्तक

इसमें विषय की प्रधानता रहती है। किसी में किसी प्रसंग को लेकर भावानुभूति का चित्रण होता है और किसी में किसी विचार अथवा रीति का वर्णन किया जाता है। कबीर, तुलसी, रहीम के भक्ति एवं नीति के दोहे तथा बिहारी, मतिराम, देव आदि की रचनाएँ इसी कोटि में आती हैं।

(ii) गेय मुक्तक

इसे गीति या प्रगीति काव्य भी कहते हैं। यह अंग्रेजी के लिरिक का समानार्थक है। इसमें भावप्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, सौन्दर्यमयी कल्पना, संक्षिप्तता, संगीतात्मकता की प्रधानता होती है।

हिन्दी पद्य साहित्य का इतिहास

हिन्दी पद्य साहित्य के इतिहास को विद्वानों ने मुख्यतः चार भागों में बाँटा है। यह विभाजन युग-विशेष की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर किया गया है जो इस प्रकार है—

1. आदिकाल (वीरगाथा काल)	800 विक्रमी सं० से 1400 वि० सं० तक (सन् 743 ई० से 1343 ई० तक)
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)	1400 वि० सं० से 1700 वि० सं० तक (सन् 1343 ई० से 1643 ई० तक)
3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)	1700 वि० सं० से 1900 वि० सं० तक (सन् 1643 ई० से 1843 ई० तक)
4. आधुनिक काल	1900 वि० सं० से अब तक (सन् 1843 ई० से आज तक)

(1) आदिकाल (सन् 743 ई० से 1343 ई० तक)

हिन्दी के प्रथम उत्थान काल को वीरगाथा काल, चारण काल आदि नाम भी दिये गये हैं। उस समय देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। इन राज्यों के राजपूत राजा आपस में लड़ते रहते थे। स्वभाव से ये राजा वीर, साहसी और विलासी थे। छोटी-छोटी बातों पर मन-मुटाव, ईर्ष्या तथा एक-दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति के कारण प्रायः इनमें लड़ाइयाँ होती रहती थीं। मुसलमानों के आक्रमण भी इसी समय आरम्भ हो गये थे। इस समय वीर पुरुषों के यशोगान तथा वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन ही कविता का मुख्य विषय रहा। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं—

1. आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा।
2. सामूहिक राष्ट्रीयता की भावना का अभाव।
3. युद्धों के सुन्दर और सजीव वर्णन।
4. वीर रस के साथ श्रृंगार का भी वर्णन।
5. ऐतिहासिक वृत्तों में कल्पना का प्राचुर्य।

आदिकाल की रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं—

(1) प्रबन्ध काव्य के रूप में।
(2) वीर-गीतों के रूप में।

प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

1. दलपति विजय	**खुमाण रासो**	प्रबन्ध काव्य
2. चन्दबरदायी	**पृथ्वीराज रासो**	प्रबन्ध काव्य
3. शारंगधर	**हमीर रासो**	प्रबन्ध काव्य
4. नल्ल सिंह	**विजयपाल रासो**	प्रबन्ध काव्य
5. जगनिक	**परमाल रासो (आल्ह खण्ड)**	वीर गीत
6. नरपति नाल्ह	**बीसलदेव रासो**	वीर गीत
7. केदार भट्ट	**जयचन्द्र प्रकाश**	वीर गीत
8. मधुकर	**जयमयंक जसचन्द्रिका**	वीर गीत

वीर गीत काव्यों में सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय काव्य आल्ह खण्ड है। जगनिक नामक भाट कवि द्वारा रचित इस काव्य में महोबा के दो प्रसिद्ध वीरों आल्हा तथा ऊदल (उदय सिंह) के वीर चरित का विस्तृत वर्णन है। यह बहुत ही लोकप्रिय है और इसके गीत आज भी वर्षा ऋतु में उत्तर भारत के गाँव-गाँव में ढोलक की थाप के साथ गाये जाते हैं।

इस काल में कुछ श्रृंगार रस की तथा भक्ति की रचनाएँ भी हुईं, किन्तु प्रमुखता वीर रस के काव्यों की ही रही। विद्यापति, अब्दुल रहमान इस युग के अन्य प्रसिद्ध रचनाकार हैं।

रासो ग्रन्थों की भाषा

रासो ग्रन्थों की भाषा डिंगल है। यह वीर काव्यों के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। भाव-व्यञ्जना के लिए इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी, पंजाबी, ब्रज आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग खुलकर किया गया है। इसमें हृदय को स्पर्श

करने की अद्‌भुत क्षमता है। इन ग्रन्थों में विविध छन्दों का प्रयोग मिलता है। दोहा, सोरठा, त्रोटक, तोमर, चौपाई, गाथा, आर्या, सट्टक, रोला, छप्पय, कुण्डलियाँ आदि छन्दों का कलात्मक प्रयोग हुआ है। इनमें रसोत्कर्ष की अपूर्व शक्ति है।

(2) भक्तिकाल (सन् 1343 ई0 से 1643 ई0 तक)

आदिकाल के समाप्त होते-होते देश में राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियाँ बदल गयीं। मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर परस्पर लड़ते रहनेवाले छोटे-छोटे राजा भी अब न रहे। इसी परिवर्तित परिस्थिति में भक्ति-भावना का उदय हुआ। 14वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस भक्ति-भावना ने हिन्दी काव्य को विशेष रूप से प्रभावित किया और भक्ति की कई शाखाओं का विकास हुआ। अध्ययन की सुविधा के लिए इस काल के काव्य को दो शाखाओं में विभाजित किया जाता है—निर्गुण शाखा तथा सगुण शाखा। प्रथम की ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी तथा द्वितीय की रामाश्रयी और कृष्णाश्रयी दो-दो उपशाखाएँ हैं।

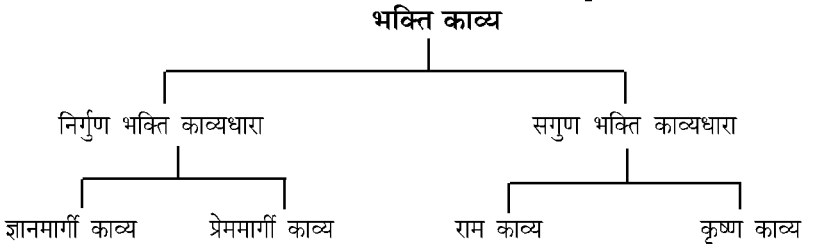

(i) निर्गुण भक्ति शाखा—इसमें ब्रह्म (ईश्वर) के निराकार स्वरूप की उपासना की विधि अपनायी गयी। इसकी ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि **कबीरदास** हैं। अन्य प्रसिद्ध कवियों में **सन्त रैदास** (रविदास), **नानक, दादू, मलूकदास, धर्मदास** और **सुन्दरदास** हैं। इन भक्तों ने साधना के सहज मार्ग को अपनाया तथा जाति-पाँति, तीर्थ-व्रत आदि बाह्याडम्बरों का विरोध किया। इनकी रचनाओं में साहित्यिक सौन्दर्य चाहे उतना अधिक न हो किन्तु भाव की दृष्टि से वे अत्यन्त समृद्ध व प्रभावोत्पादक हैं। इनकी भाषा पंचमेल सधुक्कड़ी है।

निर्गुण शाखा की दूसरी उपशाखा प्रेमाश्रयी के नाम से प्रसिद्ध है। इसे पल्लवित करने का श्रेय सूफी मुसलमान कवियों को है। इन कवियों ने लोक-प्रचलित हिन्दू राजकुमारों तथा राजकुमारियों की प्रेम-गाथाओं को फारसी की मसनवी शैली में बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। इनकी कविताएँ दोहा तथा चौपाई छन्दों में हैं। प्रेम की पीर, विरह वेदना की तीव्रता, कथा की रोचकता और कल्पना तथा इतिहास का समन्वय इन सूफी कवियों की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं, जिनका पद्‌मावत (आख्यान काव्य) हिन्दी साहित्य का एक रत्न है। इस परम्परा का यह सबसे अधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसकी कहानी में इतिहास तथा कल्पना का योग है। चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी या पद्मावती तथा राजा रत्नसेन की कहानी इसमें प्रस्तुत की गयी है। इसमें लौकिक आख्यान द्वारा पारलौकिक प्रेम की व्यञ्जना है। जायसी कृत पद्‌मावत की भाषा अवधी है। **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** के शब्दों में– ''अवधी की खालिस, बेमेल मिठास के लिए पद्‌मावत बराबर याद किया जायगा।''

कुतबन कृत '**मृगावती**', मंझन कृत '**मधुमालती**', उस्मान कृत '**चित्रावली**', शेख नबी कृत '**ज्ञानदीप**', कासिमशाह कृत '**हंस-जवाहिर**' तथा नूर मुहम्मद कृत '**इन्द्रावती**' अन्य प्रमुख प्रेमाख्यानक काव्य हैं।

(ii) सगुण भक्ति-शाखा—निर्गुण उपासना के अन्तर्गत ईश्वर के निराकार रूप को माना गया है। अवतार-भावना अथवा ईश्वर के सुन्दर मधुर रूप के लिए उसमें अवकाश न था। 11वीं शताब्दी में स्वामी रामानुजाचार्य भक्ति के क्षेत्र में अवतार-भावना को प्रतिष्ठित कर चुके थे। उन्हीं की शिष्य-परम्परा में 15वीं शताब्दी में स्वामी रामानन्द जी हुए, जिन्होंने जनता की चित्तवृत्तियों को समझने का प्रयास किया। इन्होंने जनता के बीच राम-भक्ति का प्रचार किया। रामानन्द जी की शिष्य परम्परा में गोस्वामी तुलसीदास जी हुए, जिन्होंने दशरथ-पुत्र मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम का शक्ति-शील-सौन्दर्य समन्वित रूप रामचरितमानस महाकाव्य में प्रस्तुत किया। राम-भक्ति की यह पावन मन्दाकिनी न जाने कितनों के मन का कल्मष बहा ले गयी। तुलसीदास जी द्वारा स्थापित लोक-आदर्श और राम-राज की महान् कल्पना भारतीय समाज को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को एक बड़ी देन है।

यह महाकाव्य अवधी में लिखा गया है और इसमें जायसी द्वारा अपनायी गयी दोहा-चौपाई शैली का परिष्कृत साहित्यिक रूप मिलता है। रामचरितमानस की कथा का मूल स्रोत वाल्मीकि रामायण है। इस महाकाव्य में जीवन की सर्वांगीणता है। रचना-कौशल, प्रबन्ध-पटुता, भाव-प्रवणता, रस, रीति, अलंकार, छन्द आदि सभी दृष्टियों से यह उत्कृष्ट

काव्य-कृति है। तुलसीदास की रचना का उद्देश्य लोक-मंगल की साधना है। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र के लोक-संग्रही चरित्र को काव्य का विषय बनाकर भारतीय संस्कृति, समाज और साहित्य को शक्ति प्रदान की।

सगुणोपासना की दूसरी शाखा कृष्णाश्रयी शाखा कहलाती है। इसके अन्तर्गत श्रीकृष्ण की पूर्ण ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठा हुई। कृष्ण भक्ति के प्रवर्तन का श्रेय श्री वल्लभाचार्य को है। ये अपने आराध्य श्रीकृष्ण की जन्म-भूमि में रहे और इन्होंने गोवर्धन पर्वत पर श्रीनाथ जी का एक बड़ा मन्दिर बनवाया। कृष्ण भक्ति-शाखा के सर्वोत्कृष्ट कवि सूरदास हैं, जिन्होंने कृष्ण-लीला के मधुर पद गाकर प्रेम और संगीत की ऐसी धारा बहायी जिसमें डुबकी लगाकर जनता का हृदय आनन्दमग्न हो गया। सूरदास कृत **'सूर-सागर'** हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि है। **'साहित्य लहरी'** और **'सूर-सारावली'** भी इन्हीं की रचनाएँ कही जाती हैं। सूर-सागर के अन्तर्गत सवा लाख पद रचने की बात कही गयी है, पर लगभग दस हजार ही पद मिलते हैं। इसमें विनय, बाल-लीला, गोचारण, गोपी-प्रेम, भ्रमर-गीत आदि से सम्बन्धित बड़े ही सूक्ष्म-भाव चित्र पाये जाते हैं। कृष्ण-भक्त कवियों में सूरदास के अतिरिक्त **नन्ददास, परमानन्ददास, कृष्णदास, कुंभनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी** तथा **गोविन्द स्वामी** हैं। आठ कवियों के इस समुदाय को अष्टछाप कहते हैं। अन्य अनेक कृष्णभक्त कवियों में मीराबाई और रसखान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

सामान्य प्रवृत्तियाँ

ईश्वर में सहज विश्वास, उसकी दीन-वत्सलता, नाम-स्मरण की महत्ता, जप, कीर्त्तन, भजन का अवलम्बन, गुरु की महत्ता, अहंकार का त्याग, जाति-पाँति का विरोध, लोक-मंगल की भावना, सन्त-जीवन का आदर्श, सरलता, निस्पृहता, परोपकार तथा प्रेम-महिमा आदि भक्तिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ हैं।

भक्तिकाल की साहित्यिक देन

भक्तिकाल में कबीर, जायसी, सूर, तुलसी जैसे रस-सिद्ध कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके अन्तःकरणों से निकल कर देश के कोने-कोने में फैली थी। भाव, भाषा एवं शिल्प सभी दृष्टियों से हिन्दी साहित्य का यह उत्कर्ष काल माना जाता है। सन्त कवियों ने अपना सन्देश बड़ी स्पष्टता तथा निर्भीकता से जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। ऐसा साहित्य किसी विशेष देश या काल का ही नहीं, अपितु, सार्वभौम एवं सार्वकालिक होता है। भक्तिकाल के काव्य में भाव तथा कला-पक्ष का उत्कृष्ट रूप मिलता है। इसी कारण इस काल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है।

(3) रीतिकाल (सन् 1643 ई0 से 1843 ई0 तक)

16वीं-17वीं शताब्दी तक इस देश में मुगल साम्राज्य पूर्णतः प्रतिष्ठित हो चुका था। वह वैभव के शिखर पर था। जन-जीवन भी सुख-शान्ति-पूर्ण था। साहित्य पर इस परिस्थिति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। जो कृष्ण और राधा भक्ति के आलम्बन थे, वही अब शृंगार के आलम्बन बन गये। इसके अतिरिक्त एक और परिवर्तन आया। कवियों का ध्यान साहित्यशास्त्र की ओर गया और उन्होंने रस, अलंकार, छन्द, नायक-नायिका आदि के उदाहरण रूप में कविताओं की रचना की। इस प्रकार की रचनाओं को रीति ग्रन्थ या लक्षण ग्रन्थ कहा जाता है। इस काल में ऐसी रचनाएँ अधिक हुईं, इसी कारण इसे रीतिकाल कहा जाता है।

रीति ग्रन्थ दो रूपों में मिलते हैं। एक वे जो अलंकार पर आधारित हैं और दूसरे वे जो रस पर। यहाँ संस्कृत की ही परम्परा का पालन दिखायी पड़ता है। केशव, भूषण और राजा यशवन्त सिंह अलंकारवादी आचार्य कवि थे। मतिराम, देव और पद्माकर रसवादी कवि थे। रसवादी कवियों ने शृंगार रस के अन्तर्गत नायक-नायिकाओं की मनोदशाओं का विशद् वर्णन किया है। कुछ ऐसे भी उत्कृष्ट कवि हुए हैं जिनकी रचनाएँ रीतिबद्ध नहीं हैं। बिहारी और घनानन्द के नाम इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय हैं। शृंगार के अतिरिक्त इस काल में कुछ भक्ति, नीति तथा वीर काव्य की भी रचना हुई। भूषण, गोरेलाल और सूदन वीर रस के कवि थे। वृन्द, गिरधर और दीनदयाल गिरि नीतिपरक रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रकृति-चित्रण करनेवाले कवियों में सेनापति का नाम प्रसिद्ध है। इस काल के प्रमुख कवि तथा उनकी रचनाएँ निम्नांकित हैं—

केशव	:	**रामचन्द्रिका, कविप्रिया।**
भूषण	:	**शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक।**
मतिराम	:	**रसराज, ललित-ललाम, सतसई।**
बिहारी	:	**सतसई।**
पद्माकर	:	**पद्माभरण, जगद्विनोद, गंगालहरी।**

रीतिकाल के कवि प्रायः राजाश्रय में रहते थे, इसलिए इनकी रचनाओं में अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्ति भी मिलती है।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ—रीति ग्रन्थों का निर्माण, श्रृंगार रस की प्रमुखता, काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा की प्रतिष्ठा और व्यापक प्रसार, सवैया और दोहा छन्दों का प्रचुर प्रयोग, प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण, आश्रयदाताओं की प्रशंसा, कला पक्ष की प्रधानता आदि इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

रीतिकाल की देन—इस युग की प्रमुख देन यह है कि ब्रजभाषा, काव्य-भाषा के रूप में व्यापक रूप से प्रतिष्ठित हुई है। अर्थ-गौरव, चमत्कार, लाक्षणिकता, सूक्ष्म भावाभिव्यञ्जन आदि की दृष्टि से वह पूर्ण समर्थ भाषा बन गयी। घनानन्द की लाक्षणिकता तो अद्वितीय है। कवित्त, सवैया और दोहा मुक्तक काव्य-रचना के लिए सिद्ध छन्द बन गये।

(4) आधुनिक काल (सन् 1843 ई0 से आज तक)

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल अधिकतर विद्वानों ने सं0 1900 वि0 से माना है। आधुनिक काल, गद्य काल, नवीन विकास का काल, पुनर्जागरण काल आदि इस काल के कुछ प्रमुख नाम हैं। हिन्दी काव्य के आधुनिक काल को भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावादी धारा तथा नयी कविता के युगों में क्रमशः विभाजित किया गया है।

भारतेन्दु युग—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक साहित्य के जन्मदाता माने जाते हैं। रीतिकाल में कवियों का नाता जन-जीवन से टूट चुका था। भारतेन्दु युग के कवियों ने इस सम्पर्क को फिर स्थापित किया और जन-भावना को वाणी दी। इस युग में खड़ीबोली गद्य की भाषा तो बन चुकी थी, किन्तु काव्य के क्षेत्र में ब्रज-भाषा की ही प्रधानता रही। काव्य-विषय की दृष्टि से भी नवीनता आयी। गद्य के क्षेत्र में जहाँ नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध और आलोचना आदि का विकास हुआ, वहाँ काव्य के क्षेत्र में स्वदेश-प्रेम, समाज-सुधार, प्रकृति-चित्रण आदि विषयों का समावेश हुआ।

द्विवेदी युग—महावीरप्रसाद द्विवेदी के अवतरित होते ही खड़ीबोली का आन्दोलन बड़े जोरों से चला। द्विवेदीजी से प्रेरणा पाकर अनेक तरुण कवियों ने खड़ीबोली में काव्य-रचना आरम्भ की। श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मुकुटधर पाण्डेय, लोचनप्रसाद पाण्डेय, रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय आदि कवियों ने खड़ीबोली में काव्य-रचना की। मैथिलीशरण गुप्त ने **'साकेत'** तथा 'हरिऔध' ने **'प्रियप्रवास'** नामक महाकाव्य की रचना इसी युग में की। गुप्तजी ने अपने खण्डकाव्यों की भी रचना की। इस युग की कविता इतिवृत्तात्मक तथा वर्णन-प्रधान थी। खड़ीबोली को समृद्ध और गतिशील बनाने का बहुत कुछ श्रेय आचार्य द्विवेदी को ही है और इसी कारण इस युग का नाम द्विवेदी युग पड़ा।

छायावादी युग—द्विवेदी युग के बाद छायावाद का युग आया। ऐसा लगता है मानो विदेशी शासन के अत्याचारों, नैतिकता की कठोरता से जकड़े हुए नियमों तथा आर्थिक कष्टों से उत्पन्न कवियों का विक्षोभ और असन्तोष वर्तमान से दूर किसी काल्पनिक संसार में जाने के लिए मचल उठा। वास्तव में छायावादी काव्य द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया थी। प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी छायावाद के प्रमुख कवि हैं।

वैयक्तिक अनुभूति की प्रबलता (आत्म-परक रचनाएँ), सौन्दर्य-भावना, श्रृंगार और प्रेम, वेदना, करुणा और नैराश्य की भावना, प्रकृति का मानवीकरण, रहस्य भावना इस युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं। छायावादी काव्य में अनुभूति एवं भावुकता के साथ चिन्तन की भी प्रधानता है। जीवन की चिरन्तन समस्याओं पर भी इस युग के कवियों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। मानवतावाद तथा देश-प्रेम की भावना भी इस काल के काव्य में मिलती है।

छायावादी युग प्रधानतः मुक्तक गीतों का युग है। ये मुक्तक गीत गेय तथा संगीतात्मक हैं। निराला और महादेवी के काव्य में गीत का सुन्दर विधान है। रामकुमार वर्मा के गीत भी लोकप्रिय हुए हैं। चित्रमयी कल्पना तथा लाक्षणिक प्रतीकात्मक शैली को अपनाकर छायावादी कवियों ने कविता को सजीव और सरस बना दिया। भावानुकूल छन्द चयन करने में भी इन्होंने अपनी मौलिकता का प्रदर्शन किया है। अलंकारों के प्रयोग में भी नवीनता है। मानवीकरण तथा विशेषण-विपर्यय जैसे नये अलंकारों का प्रयोग है। भाषा (खड़ीबोली) को सँवारने, उसमें ब्रज भाषा जैसा लोच और सरसता लाने, उसकी अभिव्यञ्जना-शक्ति बढ़ाने का सम्पूर्ण श्रेय इस युग को है।

प्रगतिवादी युग—द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता, आदर्श और नैतिकता के विरुद्ध विद्रोह छायावादी काव्य में हुआ था किन्तु छायावादी काव्य में सूक्ष्म और वायवीय कल्पनाओं की इतनी अतिशयता हो गयी कि स्थूल जगत् की कठोर वास्तविकता से उसका कोई सम्बन्ध ही न रह गया। फलतः प्रगतिवादी कविता में छायावादी कविता की सूक्ष्मता और

अतिकाल्पनिकता के प्रति विद्रोह हुआ। प्रगतिवादी कवि स्थूल जगत् की वास्तविकता की ओर लौटा। कार्ल मार्क्स के साम्यवाद को आधार बनाकर रोटी-कपड़ा-मकान की समस्या और मजदूरों-किसानों की दयनीय दशा को कविता का विषय बनाया गया। इन कवियों ने पूँजीवाद के विरुद्ध आवाज उठायी। सीधी-सादी अनलंकृत भाषा में अपनी बात कह देना इनकी विशेषता है। प्रगतिवादी कवियों में पन्त, निराला, दिनकर, भगवतीचरण वर्मा, नरेन्द्र शर्मा, अंचल, रामविलास शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल मुख्य हैं। इनमें से कुछ कवियों की कविताओं में सामाजिक क्रान्ति का स्वर अधिक प्रखर है। प्रगतिवादी कवियों ने छन्द के बन्धन को अनिवार्य नहीं माना।

प्राचीन रूढ़ियों और मान्यताओं का विरोध, मानवतावादी प्रवृत्ति, शोषक वर्ग के प्रति घृणा और शोषितों के प्रति सहानुभूति, विद्रोह एवं क्रान्ति की भावना, समाज का यथार्थवादी चित्रण, नारी के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण आदि इस प्रगतिवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

प्रयोगवादी धारा एवं नयी कविता का युग

प्रयोगवाद का आरम्भ 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित तथा सन् 1943 ई० में प्रकाशित **'तारसप्तक'** संकलन से माना जाता है। तारसप्तक में सप्त कवियों की रचनाएँ हैं। इन्हें अज्ञेय ने 'राहों का अन्वेषी' कहा था। ये सन्त कवि थे—अज्ञेय, गजाननमाधव मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र, भारतभूषण, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर तथा रामविलास शर्मा। सन् 1951 ई० में **दूसरा सप्तक** प्रकाशित हुआ जिसके सात कवि थे—भवानीप्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय तथा धर्मवीर भारती। सन् 1959 ई० में **तीसरा सप्तक** भी प्रकाशित हुआ। प्रयोगवाद के समर्थन में कुछ पत्र-पत्रिकाएँ भी निकलीं। कुछ प्रयोगवादी कवियों के कविता-संग्रह भी प्रकाशित हुए। अज्ञेय रचित **हरी घास पर क्षण भर, सुनहरे शैवाल, इन्द्रधनु रौंदे हुए ये, आँगन के पार द्वार,** भवानीप्रसाद मिश्र कृत **गीत फरोश, खुशबू के शिलालेख,** गिरिजाकुमार माथुर कृत **धूप के धान, शिलापंख चमकीले,** धर्मवीर भारती कृत **ठण्डा लोहा, कनुप्रिया** आदि उल्लेखनीय हैं।

घोर वैयक्तिकता, अति यथार्थवादी दृष्टिकोण, कुण्ठा और निराशा के स्वर, गहन बौद्धिकता, भदेस (अनगढ़, विरूप) का चित्रण, विद्रोह का स्वर, व्यंग्य तथा कटूक्ति प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

भाषा और शिल्प के क्षेत्र में इन कवियों ने नये प्रयोग किये हैं। साहित्यिक हिन्दी के साथ अंग्रेजी, उर्दू, बँगला तथा अन्य आंचलिक शब्दों का प्रयोग भी इन्होंने किया है। यह कविता मुक्तक शैली में रची गयी है। नवीन बिम्ब-योजना तथा नवीन उपमानों का प्रयोग (लालटेन से नयन-दीप, हड्डी के रंग वाला बादल, मजदूरिनी-सी रात आदि) भी इसकी विशेषता है। प्रयोगवादी कविता ने हिन्दी काव्य को एक नयी सशक्त भाषा दी है तथा उसकी अभिव्यञ्जना शक्ति में वृद्धि की है।

प्रयोगवादी धारा विकसित होकर नयी कविता के रूप में आयी। सन् 1943 से 1953 ई० तक की दस वर्षों की काव्यधारा में जो नवीनतम प्रयोग हुए, उन्हें कविता कहा जाता है। प्रयोगवादी कविता में भावाभिव्यक्ति प्रतीकों के माध्यम से हुई है और प्रतीकों का अत्यन्त सांकेतिक वर्णन मिलता है। मनुष्य के मन में यथार्थ को अभिव्यक्त करनेवाली प्रयोगवादी काव्यधारा सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के नेतृत्व में प्रवाहित हुई।

नयी कविता की आधारभूत विशेषता है कि वह किसी भी दर्शन के साथ बँधी नहीं है और वर्तमान जीवन के सभी स्तरों के यथार्थ को नयी भाषा, नवीन अभिव्यञ्जना विधान और नूतन कलात्मकता के साथ अभिव्यक्त करने में संलग्न है। हिन्दी का यह नया काव्य कविता के परम्परागत स्वरूप से इतना अलग हो गया है कि इसे कविता न कहकर अकविता कहा जाने लगा है।

♦

हिन्दी पद्य-साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित प्रश्न

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. किस काल को हिन्दी काव्य का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है?

2. निर्गुण काव्य-धारा की शाखाओं के नाम लिखिए।

3. सगुण काव्यधारा की शाखाओं के नाम लिखिए।

4. सगुण भक्ति-शाखा के दो कवियों के नाम, उनकी एक-एक रचनाओं के साथ लिखिए।

5. निर्गुण भक्ति-शाखा के दो कवियों के नाम, उनकी एक-एक रचनाओं के साथ लिखिए।

6. कबीर के अतिरिक्त दो प्रमुख सन्त कवियों के नाम लिखिए।

7. सूफी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।

8. रामभक्ति काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।

9. सन्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।

10. कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।

11. रामभक्ति काव्य की रचना किन भाषाओं में हुई है?

12. आदिकाल के विभिन्न नाम बताइए।

13. पूर्व-मध्यकाल किस काल को कहते हैं?

14. आदिकाल की अवधि लिखिए।

15. आदिकाल की भाषा का नाम लिखिए।

16. वीरगाथा काल के प्रथम कवि का नाम लिखिए।

17. वीरगाथा काल को 'चारणकाल' क्यों कहा जाता है?

18. आदिकाल की कविता का प्रमुख विषय क्या रहा?

19. वीरगीत की दो रचनाओं के नाम लिखिए।

20. वीरगीत काव्यों में सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ कौन-सा है?

21. आदिकाल (वीरगाथा काल) के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

22. आदिकाल की दो प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

23. भक्तिकाल कब से कब तक माना जाता है।

24. भक्तिकाल की दो शाखाओं के नाम लिखिए।

25. भक्तिकाल के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भक्तिकाल की सगुण शाखा की विशेषताएँ लिखिए।
2. ज्ञानाश्रयी (सन्त) काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
3. प्रेमाश्रयी (सूफी) काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
4. कृष्ण काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
5. राम काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
6. अष्टछाप से क्या तात्पर्य है? अष्टछाप से सम्बन्धित कवियों का नामोल्लेख कीजिए।
7. भक्तिकाल का परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
8. अष्टछाप के चार प्रमुख कवियों के नाम एवं उनकी रचनाएँ लिखिए।
9. आदिकाल को वीरगाथा काल क्यों कहा जाता है?
10. आदिकाल (वीरगाथा काल) की 5 प्रमुख विशेषताओं को लिखिए।
11. वीरगाथा काल के प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
12. भक्तिकाल के नामकरण के विषय में लिखिए।
13. भक्तिकाल की विभिन्न धाराओं का नामोल्लेख कीजिए।
14. भक्तिकाल के प्रमुख कवियों एवं उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
15. भक्तिकाल की प्रमुख विशेषताएँ (प्रवृत्तियाँ) लिखिए।
16. भक्तिकाल को हिन्दी काव्य का 'स्वर्ण युग' क्यों कहा जाता है?
17. भक्तिकाल की निर्गुण शाखा की विशेषताएँ लिखिए।

♦

अध्ययन-अध्यापन

कविता का मुख्य उद्देश्य काव्य-सौन्दर्य की रसानुभूति द्वारा आनन्द प्राप्त कराना है। यह आनन्द मूलतः अर्थ का आनन्द है, जो कविता में अन्तर्निहित रहता है। कविता का अध्ययन-अध्यापन इस प्रकार होना चाहिए कि इस उद्देश्य की पूर्ति हो सके। इस संकलन का उद्देश्य भी केवल प्रस्तुत कविताओं के अध्ययन तक ही सीमित नहीं है, अपितु उनके माध्यम से छात्र-छात्राओं को हिन्दी काव्य-साहित्य की सामान्य जानकारी देना और काव्य के पठन-पाठन के प्रति रुचि उत्पन्न करना भी है।

कक्षा में कविता का प्रभावशाली मुखर-वाचन बहुत महत्त्वपूर्ण है। अध्यापक अपने आदर्श-वाचन से इसमें सहायता दे सकते हैं। कक्षा में अच्छा पढ़ने वाले छात्र आदर्श वाचन प्रस्तुत कर सकते हैं और शेष छात्र उनका अनुकरण कर सकते हैं। वाचन के साथ ही कविता का केन्द्रीय भाव उभर कर सामने आने लगता है। अध्यापक को प्रारम्भ में इस पर कुछ चर्चा करनी चाहिए। इस कविता की मूल प्रेरणा क्या है? कवि इस कविता में क्या कहना चाहता है? किन पंक्तियों में इस कविता का केन्द्रीय भाव छिपा है? आदि ऐसे प्रश्न हैं, जिनसे इस चर्चा में सहायता मिल सकती है।

कविता के पठन-पाठन से परोक्ष रूप में छात्रों का भाषा-ज्ञान भी बढ़ता है। परन्तु कविता-शिक्षण का मुख्य लक्ष्य भाषा सिखाना नहीं है। उसका लक्ष्य आनन्द की अनुभूति कराना है। शिक्षक और छात्र मिलकर इसी आनन्द की खोज करें। शब्दार्थ, व्याख्या, घटना-व्यापार, वैज्ञानिक सत्य, पशु-पक्षी स्वभाव तथा कथा-कहानी से सम्बन्धित ज्ञान से आगे बढ़ने पर ही वास्तविक कविता-शिक्षण का कार्य आरम्भ होता है। शिक्षण की सुविधा की दृष्टि से काव्य-सौन्दर्य को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है—अभिव्यक्ति का सौन्दर्य, भाव-सौन्दर्य और विचार-सौन्दर्य। अभिव्यक्ति के अन्तर्गत नाद और चित्रात्मकता का सौन्दर्य है। अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, प्रतीप आदि के बहाने वस्तु-व्यापारों के चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। लज्जा, शोक, उत्साह, वात्सल्य आदि के वर्णन भाव-सौन्दर्य के अन्तर्गत आते हैं। जीवन-दर्शन तथा नीति-सम्बन्धी रचनाओं में विचारों की प्रमुखता रहती है। नरोत्तम का सुदामाचरित भाव-प्रधान रचनाओं का उदाहरण है। कबीर और रहीम के दोहों में विचारों की प्रधानता है। शिक्षण-कार्य में इन्हीं आनन्द तत्त्वों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहिए।

रसास्वादन की शिक्षा देना कठिन कार्य है। यदि शिक्षक का मन किसी कविता में नहीं रम सका, तो वह छात्रों में उस कविता के प्रति राग उत्पन्न करने में कभी सफल नहीं होगा। परन्तु जिस शिक्षक को काव्य से प्रेम है, उसके लिए भी काव्य शिक्षण का कोई सिद्ध सूत्र निर्धारित करना कठिन होगा। कुछ सामान्य सिद्धान्तों की ओर यहाँ संकेत किया जा रहा है—

(1) रसास्वादन की क्षमता प्रत्येक बालक में अलग-अलग मात्रा में होती है, अतः प्रत्येक छात्र से एक ही प्रकार की प्रतिक्रिया की आशा नहीं करनी चाहिए।

(2) उचित शिक्षण और अभ्यास से यह क्षमता बढ़ायी जा सकती है।

(3) कविता का सुपाठ कठिन कार्य है, अतः छात्रों द्वारा कविता-पाठ कराते समय विवेक से काम लेना चाहिए।

(4) शिक्षक के सुपाठ से भी मार्ग बहुत कुछ प्रशस्त हो जाता है। सुपाठ में व्यञ्जनों तथा स्वर वर्णों का उच्चारण पूर्ण स्पष्ट तथा शुद्ध हो। ब्रज और अवधी की रचना में भाषाओं की प्रकृति के अनुरूप ही उच्चारण हो। संगीत-तत्त्व को उभर आना चाहिए। शिक्षक की वाणी तथा भावभंगी रसानुकूल हो, जैसे—वीर रस में उत्साह, राष्ट्र-प्रेम में ओज और शान्त रस की रचना के पाठ में गाम्भीर्य अपेक्षित है। वाणी से छन्द की गति और अर्थ की अभिव्यक्ति स्पष्ट होनी चाहिए।

(5) कविता का सौन्दर्य उसके अर्थ में निहित रहता है और शब्द उस अर्थ को व्यक्त करते हैं। शब्दों के अर्थ, प्रसंगानुकूल अर्थ, वाक्य के शब्द-क्रम आदि से परिचित होना रसास्वादन का प्रथम सोपान है, अतः शिक्षक को कविता

की पृष्ठभूमि, शब्दार्थ आदि से छात्रों को परिचित कराना चाहिए। आवश्यकतानुसार पदान्वय भी करा देना चाहिए क्योंकि बाहर से अर्थ का आरोपण करना उचित नहीं होगा। इसके बाद व्याख्या, प्रश्न, तुलना आदि से विचारों, भावों और कल्पनाओं को व्यवस्थित करना वांछनीय है।

(6) कक्षा का वातावरण आनन्दमय हो, बातचीत के ढंग में अकृत्रिमता और साहचर्य का भाव हो जिससे छात्र-छात्राएँ सहभागिता का अनुभव करें।

(7) सुपाठ, व्याख्या, प्रश्नोत्तर आदि छात्रों से रसानुभूति की अभिव्यक्ति करायी जाय। कण्ठाग्र करने और सुपाठ द्वारा करने से कविता के पठन-पाठन के लिए अनुकूल संस्कार बनते हैं।

पाठ-संचालन के निम्न सोपान प्रस्तावित किये जा सकते हैं—

(1) शिक्षक द्वारा सुपाठ।

(2) केन्द्रीय भाव-ग्रहण।

(3) शब्दार्थ एवं सूक्ष्म भाव तथा विचार-विश्लेषण। यह कार्य जितना सहयुक्त एवं सम्बद्ध रूप से चल सके, उतना ही उपयोगी होगा।

(4) व्याख्या एवं आस्वादन।

(5) बालकों द्वारा सुपाठ।

(6) कण्ठाग्र करना एवं अन्य साधनों द्वारा अभिव्यक्ति।

मुक्तक रचनाओं में प्रायः एक ही अन्विति रहती है, अतः सम्पूर्ण कविता को लेकर ही शिक्षण-कार्य करना चाहिए। प्रसाद जैसे आधुनिक कवियों की संकलित रचनाएँ इसी कोटि की हैं। दोहे, पद तथा मुक्तक छन्द भी इसी कोटि में आते हैं। लम्बी कविताओं को अन्वितियों में बाँटने की आवश्यकता भी होगी।

छात्रों के रसास्वादन में सहायता प्रदान करने और उसकी अभिव्यक्ति के लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में प्रश्न-अभ्यास दिये गये हैं। शिक्षक को इनसे सहायता लेनी चाहिए और आवश्यकतानुसार प्रश्न तथा अभ्यास बना लेने चाहिए। छात्रों का ध्यान कवि की शैली की ओर भी आकर्षित किया जाय। कवि के सामान्य परिचय में कवि की भाषा-शैली तथा अन्य विशेषताएँ भी उदाहरण देकर बतायी जायँ और छात्रों को उसकी रचनाओं का परिचय देकर उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

रस, अलंकार एवं छन्दों की सामान्य जानकारी होना भी कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। इसके लिए परिभाषा और उदाहरण कण्ठस्थ कर लेना मात्र पर्याप्त नहीं है। उदाहरण द्वारा यह स्पष्ट करा देना चाहिए कि काव्य-सौन्दर्य के बोध में इनका क्या योगदान है। शिक्षण-क्रम में भी इन सौन्दर्य तत्त्वों की ओर निरन्तर ध्यान आकर्षित करते रहना चाहिए।

हिन्दी काव्य साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय भी छात्रों को देना है। इसके अन्तर्गत विभिन्न काव्यों की सामान्य प्रवृत्तियों का ज्ञान, प्रमुख कवियों और उनकी प्रमुख रचनाओं से परिचय कराना अपेक्षित है। प्रमुख काव्य रूपों और विधाओं के विकास का सामान्य ज्ञान भी अपेक्षित होगा।

इस परिप्रेक्ष्य में पाठ्य-पुस्तक के कवियों के योगदान और उनके स्थान का भी संक्षिप्त विवेचन हो जाना चाहिए और उनके जीवन तथा उनकी रचनाओं का कुछ विस्तार के साथ अध्ययन आवश्यक है।

शिक्षण से सम्बन्धित सामान्य बातों का ही यहाँ पर संकेत किया गया है। स्थानीय परिस्थितियों और कार्य की सीमाओं को देखते हुए शिक्षकों को अपने विवेक का सहारा सदैव लेना पड़ेगा।

♦